IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

शरद जोशी के व्यंग्य में 'मानवीय मूल्यों ' का विघटन

वसी उररहमान खां
यू० जी० सी० नेट, हिन्दी साहित्य
Mb: 9997187240
मो० बाजोड़ी टोला, रामपुर (उ०प्र०)

शोध सार:

शरद जोशी की व्यंग्य लेखन के प्रति चिंता आम आदमी की चेतना को सामाजिक आधार प्रदान करने से जुड़ी रही। जोशी जी की रचनाओं में मानवीय मूल्यों का विघटन एक प्रमुख विषय है। उन्होंने समकालीन समाज, राजनीति और प्रशासन में व्याप्त भ्रष्टाचार, अवसरवाद और स्वार्थ को उजागर कर नैतिक पतन पर तीखे व्यंग्य किये हैं। उनके व्यंग्य बताते हैं कि आधुनिक युग में सत्य, वैराग्य, और ईमानदारी जैसे आदर्श पीछे छूट गए हैं। इसके विपरीत झूठ, हिंसा, चापलूसी जैसे दुर्गुणों को समाज में स्वीकार्यता मिलने लगी है।

बीज शब्द: व्यंग्य, विघटन, मानवीय मूल्य, राजनीति, भ्रष्ट, अफसर, शरद जोशी

हिन्दी व्यंग्य को उपेक्षा के बिन्दु से ऊपर उठाकर उसे हिन्दी साहित्य में एक सम्मानजनक लेखन का दर्जा दिलाने में जिन व्यंग्यकारों ने अपना योगदान दिया है उनमें शरद जोशी जी का नाम प्रथम पंक्ति में लिया जाता है। वे व्यंग्य त्रयी के स्तम्भ थे। उन्होंने एक स्वाभिमानी लेखक का जीवन जिया और अपने जीवन काल में कोई भी गलत समझौता नहीं किया और न ही किसी मिथ्या प्रलोभन के शिकार हुए। लगभग पचास वर्षों की लेखन की अवधि में शरद जोशी ने व्यंग्य साहित्य को जो समृद्धि दी, उसका विस्तार उनके व्यंग्य संग्रहों में है। उनकी लेखनी का पैनापन, भाषा का सौन्दर्य, गलत के प्रति तिलमिला देने वाला प्रहार और नैतिक मूल्यों को ऊपर उठाने की भावना उनकी रचनाओं में मुखर हुई है। एक सजग और जिम्मेदार लेखक के रूप में उन्होंने हिन्दी व्यंग्य साहित्य को जो समृद्धि प्रदान की है उसे किसी भी कीमत पर नहीं भुलाया जा सकता।[1]

व्यंग्यकार शरद जोशी जी ने जीवन मूल्यों के विघटन के मूल में विद्रूप राजनीति को काफी करीब से देखा है। मूलतः मूल्यों की गिरावट, अवसरवादिता, सुविधावादी अधर्म चरित्र इत्यादि राजनीति के बादलों से ज़िन्दगी के दूसरे क्षेत्रों पर कूटनीति, भ्रष्टाचार, विसंगति, अत्याचार, दुराचार, कदाचार की वर्षा हो रही है। भारतीय राजनीति में नैतिकता की स्थिति काफी गिर रही थी। राजनीति का केंद्र बिन्दु राजनेता है, जो बहुरूपिये हो गए है।[2]

"छोटा अफसर किसान की तरफ लपका !
" ओय क्या नाम है तेरा ?
किसान भाग कर पास आया | छोटे अफसर ने उससे घुड़ककर कहा !
"अबे तेरे खेत में इल्ली है ?"
"नहीं है हुज़ूर।"
"अबे थी न, वह कहाँ गई "
"अबे बता कहाँ गई सब इल्ली ?"

किसान हाथ जोड़े काँपने लगा। उसे लगा इस अपराध में उसका खेत ज़ब्त हो जाएगा। छोटे अफसर ने क्रोध से सारे खेत की ओर देखा और फिर बोला, "अच्छा खैर, ज़रा हरा चना तुड़वाकर साहब की जीप में रखवा दे ! चल ज़रा जल्दी कर।"[3]
एकाएक मुझे लगा कि जीप पर तीन इल्लियाँ सवार हैं जो खेतों की ओर चली आ रही हैं। तीन बड़ी इल्लियाँ! सिर्फ तीन ही नहीं, ऐसी हज़ारों इल्लियाँ हैं लाखों इल्लियाँ, ये सिर्फ चना ही नहीं खा रहीं, सब कुछ खाती हैं और निश्शंक जीप पर चली आ रही हैं।[4]

बस स्टैंड का भिखारी हो गया है यह देश ! उस मुस्टंडे को माँगते देख, जो खिन्नता मेरे मन में घिर आती है, वही अखबार में रोज सहायता या कर्ज माँगने की खबर पढ़कर भी घिर आनी चाहिए। कब थकेगा बस स्टैंड का यह भिखारी माँगते हुए ! कब तक उस सही अपंग लड़की का अधिकार छीनता रहेगा ! आज़ादी के कितने साल बीत गए कब शर्म आएगी मुस्टंडे को।[5]

मंच से पार्टियों ने उन लोगों को खिसकाना शुरू कर दिया था जिनमें थोड़ा बहुत अध्यात्म पाया जाता था, टिकट पाना है, चुनाव जीतना है, मन्त्री बनना है और फिर अपने लोगों के लिए जो किया जा सकता है वह करना है। जो कुछ भी अध्यात्म है, तो फकत इतना है। प्रजातंत्र में नेताओं की रुचि परम् व्यक्तिगत कारणों से है। यदि वे मंत्री हैं तो इस इस बात का इस देश से सीधा सम्बंध नहीं, उनके लाभ प्राप्ति में यदि देश का भी कोई लाभ हो जाता है तो उन्हें इससे कोई इन्कार नहीं है। यहाँ तक का स्वार्थ तो किसी भी देश में दिखाई दे सकता है कि राष्ट्र के हित में इमारत बन रही है, तो कोई नेता ठेकेदार से रिश्वत या कमीशन खा गया, पर भारत आज इस ऊँचाई पर है कि कमीशन खाना है, इसलिए एक गैर जरुरी इमारत के निर्माण पर जोर दिया गया और वह खड़ी की गई। निजी फायदे बट गए! इमारत के सही उपयोग की चिंता कोई नहीं सोचता। इसकी बजाय लोग नई इमारत की सोचते हैं और उसके निर्माण की महत्ता प्रतिपादित की जाती है।[6]

जोशी जी ने "हम भ्रष्टन के भ्रष्ट हमारे" में समाज में पनपते भ्रष्टाचार से जन्म लेती गरीबी तथा बदहाली का यथार्थ चित्रण किया है। 'झोपड़ी पट्टी के बाहर खेलते रहते हैं गंदे काले बच्चे।' इम्पाला में रविशंकर का लैटेस्ट एल० पी० खरीद कर लौटती हुई औरत सोचती है, ये लोग अपने बच्चों को स्कूल क्यों नहीं भेजते ! रेल के बाहर से खिड़कियों में हाथ फैला रोटी, बची हुई सब्जी या पाँच दस पैसा माँगते हैं, गंदे घिनौने भिखारी ! एयर कंडीशन कार में अपने टोस्ट पर मक्खन लगाता रेलवे केटरिंग को नापसंद करता वह शरीफ आदमी आमलेट खाते सहयात्री से प्रश्न पूछता है राष्ट्रीय प्रश्न, ये लोग भीख क्यों माँगते हैं ! कोई मेहनत मजदूरी क्यों नहीं करते? हर विषय में खास राय रखते हैं सभ्य जन![7]
बिहारी के दोहों की तरह शरद जोशी अपने व्यंग्य का विस्तार पाठक पर छोड़ देते हैं। एक बार शरद जोशी ने लिखा था "लिखना मेरे लिए जीवन जीने की तरकीब है, इतना लिख लेने के बाद अपने लिखे को देख मैं सिर्फ यही कह पाता हूँ कि चलो, इतने वर्ष जी लिया। यह एक मुझे बढ़िया बहाना मिल गया ! यह न होता तो इसका क्या विकल्प होता ! अब सोचना कठिन है। लेखन मेरा एक निजी उद्देश्य है।[8]

निष्कर्ष:- शरद जोशी की लेखनी का पैनापन तथा भाषा का सौन्दर्य, मानवीय मूल्यों को ऊपर उठाने की भावना उनकी रचनाओं में मुखर हुई है। शरद जोशी के व्यंग्य में चाहे वह राजनीतिक क्षेत्र हो, चाहे सामाजिक या आर्थिक सभी क्षेत्रों में मानवीय मूल्यों का पतन देखने को मिलता है। शरद जोशी जी ने अपने व्यंग्य लेखन के माध्यम से अनैतिकता, मूल्यहीनता तथा अराजकता को उजागर करने का कार्य किया है।

सन्दर्भ संकेत

1. www.शरद जोशी.को.इन
2. IJCRT.org
3. यथासम्भव : जीप पर सवार इल्लियाँ, पृष्ठ 49.
4. वही, पृष्ठ 49,
5. यथासम्भव : बस स्टैण्ड का भिखारी, पृष्ठ 34
6. यथासम्भव : चरित्र हुँह, पृष्ठ 65
7. यथासम्भव : हम भ्रष्टन के भ्रष्ट हमारे, पृष्ठ 25.
8. जनसत्ता, May 21, 2023